केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक – A तथा पत्रक – B के साथ वापस भेजना है ।

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ७ मार्च, २०१० को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र – १

जनवरी, २०१०　　　समय : सुबह ९.०० से १२.००　　　कुल गुणांक : १००

स्वामिनारायण
BAPS

अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

☞ **परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।**

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

परीक्षार्थी का जन्म दिन　दिनांक [ ][ ]　महीना [ ][ ]　वर्ष [ ][ ][ ][ ]

परीक्षार्थी का अभ्यास ....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर ....

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (६)	
	२ (५)	
	३ (४)	
	४ (४)	
	५ (८)	
	६ (८)	
	७ (७)	
	८ (५)	
विभाग-१, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (८)	
	१२ (५)	
	१३ (८)	
विभाग-२, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१४ (१५)	
विभाग-३, कुल गुण		

परीक्षक के हस्ताक्षर

....

મોડરેશન વિભાગ માટે જ

ગુણ શબ્દોમાં . . . .

ચેકર - નામ

☞ परीक्षार्थीओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ :-

१. मुख्य परीक्षा के दिन वर्गखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।

२. **बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

३. दायीं ओर दिए गए अंक प्रश्न के गुण दर्शाते हैं ।

४. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।

५. मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।

६. **परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

७. परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गीनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।

८. **परीक्षा खंड के बाहर** और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

विभाग - १ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना

प्र. १ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए । **(६)**
(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।)

१. ब्रह्मरूप होने के लिए : अक्षरब्रह्म की आवश्यक्ता ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२. प्रकट का अर्थ क्या है ? और किस रीति से प्रकट हैं ?

३. भगवान को अरूप कहा जाएगा, इसे ही भगवान के विरुद्ध द्रोह माना जाएगा ।

४. श्रीजीमहाराज सर्वोपरी गुणातीतानंद स्वामी के अनुसार ।

प्र. २ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए । **(५)**

उदाहरण : 'भगवान को निराकार समझने के रूप में किया गया पाप तो पंच महापापों की अपेक्षा भी बहुत बड़ा पाप है ।'

उत्तर : भगवान को निराकार समझने से हानि ।

१. अन्नत मुक्त ज्यां आनंदे भरिया, रहे छे प्रभुजीनी पास रे .....

.....

२. यह पाप तो भगवान के प्रताप से पूर्णतः जल जाएगा और सम्बन्धित पुरुष का जीव भगवान को प्राप्त करेगा ।

३. बंध कीधां बीजां बारणां रे, वे'ती कीधी अक्षरवाट ।

४. परमेश्वर तो देश, काल, कर्म और माया की सत्ता को जितना चलने देते हैं, उतनी हद तक ही उनकी गतिविधि रहती है ।

५. भगवान तो सदा मूर्तिमान ही हैं। मूर्तिमान भगवान अक्षरधाम में निवास करने पर भी अनंतकोटि ब्रह्माडों में प्रतीत होते हैं ।

प्र. ३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. परब्रह्म को तत्त्व सहित जानने के लिए अक्षरब्रह्म की आवश्यकता ।

(१) ☐ म. १३ (२) ☐ म. १८

(३) ☐ प्र. ४१ (४) ☐ प्र. ५१

२. श्रीजीमहाराजने स्वयं भक्तों को समझाई हुई अपनी सर्वोपरिता ।

(१) ☐ तुलसी दवे (२) ☐ शीतलदास

(३) ☐ वाघा खाचर (४) ☐ पर्वतभाई

प्र. ४ निम्नलिखित किसी <u>एक</u> प्रसंग का वर्णन कर के उसका सिद्धांत लिखें । **(४)**

१. नरक भोग रहे जीवों को मुक्ति ।
२. कोई इस फूल तक नहीं पहुँचता ।
३. हम नहीं तो हम जैसा रखेंगे ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सिद्धांतः .....

.....

.....

प्र. ५ किन्हीं <u>दो</u> विषयों के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. गुणातीत संत की महिमा : प्रसिद्ध संत कवियों के पदों में ।
२. श्रीजीमहाराज ने प्रसंगोपात समजाई हुई अपनी सर्वोपरिता ।
३. दिव्यभाव समझने की आवश्यकता ।
४. 'स्वयं अक्षर हैं' गुणातीतानंद स्वामी ने स्वमुख से कहे हुए प्रसंग । (कोई भी दो प्रसंग)

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ६ निम्नलिखित किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. वरताल में हनुमान द्वार पर महाराज को पसीना होने लगा ।

२. ज्ञानी भक्त के लिए भगवान कभी भी परोक्ष नहीं होते ।

३. घनश्यामदास बोले, आप वास्तव में अक्षर हैं ।

४. अपने इष्टदेव के प्रति पतिव्रता का प्रण और अनन्य निष्ठा वही उपासक का सच्चा लक्षण है ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ७ उपासना में क्या समझना चाहिए ? और क्या नहीं समझना चाहिए ? उसके आधार से निम्नलिखित विधानों की पूर्ति कीजिए । **(७)**

(उपासना में क्या समझना चाहिए ?)

१. इस लोक में से अंतर्धान .....

.....

..... सम्यक् रूप से प्रकट हैं ।

२. पुरुषोत्तमनारायण की तरह ..... हैं ।

३. पुरुषोत्तम की अन्वय ..... भिन्न भिन्न हैं ।

४. अक्षरब्रह्म एक ही ..... सेवक के रुप में रहता है ।

(उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए ?)

५. मुक्त और अक्षरब्रह्म ..... ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

६. प्रकट ब्रह्मस्वरूप संत ..... ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

७. अक्षरब्रह्म और ..... ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

प्र. ८ टिप्पणी लिखिए । 'गुणातीतानंद स्वामी अक्षर हैं' - परमहंसों के शब्दों में । **(५)**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज

प्र. ९ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''परमचैतन्यानंद स्वामी को श्रीहरि के लिए निमंत्रण पत्र देकर भेजिए ।'' **अथवा**

२. ''वह आप से नहीं हो सकेगा ।''

( ) कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

३. ''अब हमको ही तुम्हारी सारी समस्याओं का समाधान तथा चिंता करनी पड़ेगी ।'' **अथवा**

४. ''आप लोग अन्तराष्ट्रीय यात्रा पर निकले हैं ।''

५. ''यदी तुम्हें किसी भी प्रकार का कष्ट हो तो मुझे पत्र लिखना ।'' **अथवा**

६. ''आप सभी ने एक अपैया तोडा है, परंन्तु एक अपैया को रखना पड़ेगा । (शराब न पीने की प्रतिज्ञा)''

प्र. १० निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) **(८)**

१. निष्कुलानंद स्वामी गढ़डा गाँव से चले गए । **अथवा**

२. मेंगणी के ठाकुर मानसिंहजी श्रीजी के अनन्य आश्रित हुए ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. स्वामीश्री के सेवक संत को मन में प्रश्न हुआ 'सेवक कौन है' ? **अथवा**

४. धुलेंटी की महफ़िल मनाने आये हुए मेहमान को सब कुछ बदला हुआ सा लगा ।

प्र. ११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. अरदेशरजी को समझ में आया हुआ रघुवीरजी महाराज का महिमा । **अथवा**

२. सत्संगी के सत्संगी पर्वतभाई ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. स्वामीजी की सहनशीलता । **अथवा** ४. बालस्नेही प्रमुखस्वामी महाराज ।

प्र. १२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(५)**

१. पर्वतभाई किसके नौकर बनने तैयार हो गये ?

.....

.....

२. अडालज की बावडी सिने निर्माण करवाई थी ?

३. इन साधु के पास कब नहीं बैठ पाएँगे ?

४. दलुभाई क्यूँ आनन्द और हर्ष से नाच उठे ?

५. हनुमानमढ़ी के मंदिर में कौन सी कथाएँ होती रहती थी ?

प्र. १३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (८)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. भक्तचिंतामणि की विशेषता ।

(१) ☐ मुक्तानन्द स्वामी का रचा हुआ । (२) ☐ महाराज की उपस्थित में रचा हुआ है ।

(३) ☐ आज भी घर घर में गुंजता रहा है । (४) ☐ संस्कृत में रचा हुआ है ।

२. कुशलकुंवरबा के श्रीजीमहाराज के प्रति पराभक्ति के प्रसंग ।

(१) ☐ यह राज्य तथा धन के भंडार सब कुछ आपका है ।

(२) ☐ घर के मालिक आप स्वयं यहाँ आए, तब नौकर को क्या चिंता ।

(३) ☐ चावल के छिलके स्वयं अपने हाथ से दूर किए ।

(४) ☐ ब्राह्मण के पास से कथा सुनती थी ।

३. प्रमुखस्वामी महाराज को देखकर किस किस धर्मगुरुओंने विभूतिपुरुष का आकलन किया है ।

(१) ☐ पोप जोन पोल (दूसरा) (२) ☐ श्री जगजीतसिंघजी

(३) ☐ श्री लाउ (४) ☐ दलाई लामा

४. शरीररूपी मन्दिर के श्रृंगार क्या है ?

(१) ☐ संतोष (२) ☐ बाहर से साफ़

(३) ☐ दया (४) ☐ शील

विभाग – ३ : निबंध

प्र. १४ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए । **(१५)**

१. बी.ए.पी.एस द्वारा पारिवारिक (कौटुम्बिक) मूल्यों का जतन । (स्वामिनारायण प्रकाश – अगस्त – २००७)

२. भारत के भाग्योदय का विश्वास : प्रमुखस्वामी महाराज । (स्वामिनारायण प्रकाश – जनवरी – २००८)

३. प्रभावशाली और सफल नेतृत्व – शास्त्रीजी महाराज । (स्वामिनारायण प्रकाश – फरवरी – २००९)

(   ) ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

✻ ✻ ✻